



पत्र-पुष्प



निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई-बहिनों प्रति मधुर याद पत्र (19-01-13)

प्राणेश्वर अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति लाडले, सदा परमात्म पालना में पलने वाले, अपने रुहानियत और दिव्यता सम्पन्न चेहरे द्वारा प्रभु प्रत्यक्षता के निमित्त बनी हुई मीठी टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें, ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - प्यारे-प्यारे ब्रह्मा बाबा का यह स्मृति दिवस आप सभी ने बहुत स्नेह और शक्ति सम्पन्न स्वरूप से मनाया होगा। इस स्मृति दिवस पर भारत तथा विदेश से 20,000 से भी अधिक भाई बहिनें बापदादा से सम्मुख मिलन मनाने शान्तिवन में पहुंच गये। 18 जनवरी को सवेरे से ही कुछ भाई बहिनें मधुवन के चारों धामों की यात्रा करने पाण्डव भवन गये। मुरली क्लास के बाद बापदादा को भोग स्वीकार कराया गया। फिर दादियों के साथ मुख्य भाई तथा अन्य सभी भाई-बहिनें स्नेह में समाये हुए शान्ति स्तम्भ और बापदादा के कमरे वा कुटिया में अव्यक्त मिलन मनाते रहे। कलकत्ता के भाई बहिनों ने चारों धामों का फूलों से बहुत सुन्दर श्रृंगार किया था। आज के दिन प्रकृति ने भी अच्छा खेल दिखाया, सवेरे 4 बजे जोर से बरसात शुरू हो गई, फॉगी और शीत लहर के बीच पूरा मधुवन ही सूक्ष्मवतन बन गया।

बोलो, आप सभी भी बुद्धियोग बल से रुहानी स्नेह में समाये हुए अपने मधुवन घर का अनुभव कर रहे हो ना। बापदादा भी वतन से सब दृश्य देखते हर्षिते रहे और शाम के समय विशेष प्यार के सागर बापदादा जब बच्चों की महफिल में पधारे तो वाह बच्चे वाह! के स्नेह भरे शब्दों के साथ सभी को तीन तख्त वरदान रूप में देते सदा रुहानी प्यार और नशे में रहने की प्रेरणा दी और कहा कि अब दूसरी सब बातों से किनारा कर ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने का प्लैन बनाओ। उमंग-उत्साह से यह कदम तीव्रता से उठाओ। यह महावाक्य तो आप सबने सुन लिये होंगे। इस बार शान्तिवन में भी बड़े भाई बहिनों ने विशेष साकार मात पिता की अनेकानेक विशेषतायें सुनाते, उनके अंग-संग के अनुभवों द्वारा सबको भरपूर किया।

अब तो बार-बार यही शुभ संकल्प आ रहा है कि हर पल बाबा के साथ का अनुभव करते, डबल लाइट स्थिति में रह मन्सा शुभ वृत्तियों द्वारा प्रकृति सहित पूरे विश्व को सतोप्रधान बनाने की सेवा कर परमात्म प्रत्यक्षता का झण्डा लहराना है। किसी भी छोटी मोटी बात के कारण मेरी स्थिति नीचे ऊपर न हो। इस जीवन यात्रा में मेरा हर श्वास, हर संकल्प, हर सेकण्ड सफल हो। इसके लिए अपने संकल्पों की क्वालिटी अच्छे से अच्छी बनानी है। हर संकल्प ब्रह्मा बाप समान हो। जैसे बाबा का सब बच्चों के लिए अति प्यार है, सबके प्रति भावना है सभी सदा सुखी रहें इसलिए सबके दिल से निकलता है मेरा बाबा, मीठा बाबा! ऐसे हम सबकी भाषा भी बड़ी शुद्ध और कल्याण वाली हो। सदा स्व-चितन, ईश्वर चितन चलता रहे। हर एक के पार्ट को देखते हुए सदा मुस्कराते रहें, अन्दर यही भावना रहे कि सब अच्छे से अच्छा पार्ट बजायें।

बाकी मधुवन में तो बाप और बच्चों के मिलन की सुन्दर महफिल चल रही है। मैं तो प्रभु लीला को देख-देख हर्षित होती रहती हूँ। दादी गुल्जार भी सभी को बहुत-बहुत स्नेह सम्पन्न याद दे रही हैं। अच्छा-

सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के. जानकी





ये अव्यक्त इशारे



परमात्म दिल-तख्तनशीन बनो

- 1) बापदादा का दिल ही बड़े से बड़ा तख्त है। जो दिलाराम बाप को दिल देने वाले और बाप का दिल लेने वाले हैं वही दिलतख्तनशीन बनते हैं। दिल लेना माना उनके दिल का जो श्रेष्ठ संकल्प है, उस संकल्प को पूरा करना। बाप की दिल लेना अर्थात् विश्व-कल्याणकारी बनना और विश्व के प्रति सर्वशक्तियों का दाता बनना।
- 2) जैसे कोई बहुत प्रिय बच्चे होते हैं या सिकीलधे लाडले होते हैं तो उन्हें कभी नीचे धरनी या मिट्टी पर पांव नहीं रखते देते। तो बापदादा भी लाडले बच्चों को दिल तख्त के नीचे उतरने नहीं देते, इससे श्रेष्ठ स्थान और कोई है ही नहीं तो बुद्धि रूपी पांव और कहाँ टिक कैसे सकते!
- 3) दिलतख्त पर रहना माना परिस्तान की परियाँ बनना। ऐसी परियाँ सदा उड़ती रहती हैं, तख्त से नीचे नहीं आती। तख्त से नीचे आना अर्थात् बाप के सम्मुख के बजाए किनारे होना – जैसे बाप सदा बच्चों के सम्मुख हैं वैसे बच्चे भी सदा बाप के सम्मुख हैं। परियाँ का भी संगठन होता है, साथ-साथ उड़ती हैं। जहाँ चाहें वहाँ उड़कर पहुँच सकती हैं, उन्हें कोई आधार की आवश्यकता नहीं।
- 4) सदा दिलतख्तनशीन बनने से स्वतः ही निरन्तर योगी बन जायेंगे। वर्तमान समय बाप द्वारा जो ताज और तख्त मिला है यही ताज व तख्त अनेक जन्मों के लिए ताज, तख्त प्राप्त कराता है। विश्व-कल्याण की जिम्मेवारी का ताज है और बाप का दिलतख्त है।
- 5) बापदादा का यह दिलतख्त इतना प्युअर है जो इस तख्त पर वही बैठ सकते जो सदा प्युअर हैं। बाप तख्त से उतारते नहीं लेकिन कोई कोई बच्चे स्वयं उतर जाते हैं। संकल्प में भी अपवित्रता वा अमर्यादा आ जाती है तो तख्तनशीन के बजाए गिरती कला में अर्थात् नीचे आ जाते हैं।
- 6) बाप की सब बच्चों को सदाकाल के लिए ऑफर है कि बच्चे सदा तख्तनशीन रहो लेकिन आटोमेटिक कर्म की गति के चक्र प्रमाण सदाकाल वही बैठ सकता है जो सदा फॉलो फादर करने वाले हैं। दूसरा जो अकाल तख्तनशीन निरन्तर होंगे वही दिलतख्तनशीन भी सदाकाल होंगे। ब्राह्मण जीवन में कभी-कभी तख्तनशीन तो भविष्य में भी पूरा आधाकल्प तख्तनशीन अर्थात् रॉयल फैमली में नहीं आ सकते।
- 7) दिलाराम बाप की दिल में सर्व को आराम देने वाले बच्चे

ही रहते हैं। बाप की दिल में सर्व बच्चों के प्रति एक ही बात है कि मेरा हर एक बच्चा विशेष आत्मा विश्व का मालिक बने। विश्व के राज्य भाग्य का अधिकारी बनें। हरेक बच्चा एक दो से श्रेष्ठ सजा-सजाया, गुण सम्पन्न, शक्ति सम्पन्न नम्बरवन बने। हर एक की विशेषता एक दो से ज्यादा आकर्षणमय हो, जो विश्व देखकर हरेक के गुण गाये।

8) कहावत है - सच्ची दिल पर साहेब राज़ी। तो सभी बच्चे सच्ची दिल से दिलतख्तनशीन बन सकते हो। सच्ची दिल से दिलाराम बाप को अपना बना सकते हो। दिलाराम बाप सच्ची दिल के सिवाए सेकण्ड भी याद के रूप में ठहर नहीं सकते। सच्ची दिल वाले की सर्वश्रेष्ठ संकल्प रूपी आशायें सहज सम्पन्न होती हैं। सच्ची दिल वाले साकार, आकार, निराकार तीनों रूपों में सदा साथ का अनुभव करते हैं।

9) बेहद का बाप, बेहद का संकल्प रखने वाला है कि सर्व बच्चे बाप समान बनें। ऐसे नहीं कि मैं गुरु बनूँ और यह शिष्य बनें। नहीं, बाप समान बन बाप के दिलतख्तनशीन बनें। यहाँ कोई गद्दी-नशीन नहीं बनना है। वह तो एक दो बनेंगे लेकिन बेहद का बाप बेहद के दिलतख्तनशीन बनाते हैं। नये पुराने सभी बच्चे अधिकारी बन सकते हैं। सभी को एक ही जैसा गोल्डन चांस है।

10) जो शक्तिशाली हैं वे सदा विघ्न-विनाशक होंगे और जो विघ्न-विनाशक होंगे वह स्वतः ही बाप के दिलतख्तनशीन होंगे। तख्त से नीचे लाने वाला है ही माया का कोई-न-कोई विघ्न। तो जब माया ही नहीं आयेगी तो फिर सदा तख्तनशीन रहेंगे। इसके लिए सदा अपने को कम्बाइन्ड समझो। हर कर्म में भिन्न-भिन्न सम्बन्ध से साथ का अनुभव करो।

11) बापदादा बच्चों के दिल का उमंग-उत्साह और सेवा में वृद्धि और मायाजीत बनने के समाचार सुनते रहते हैं। जो किसी भी कारण माया की दुविधा में रहते वह दलदल में चले जाते हैं। बाप तो दलदल से निकाल दिलतख्तनशीन बना रहे हैं। जब पसन्द दिल तख्त है फिर दलदल की ओर क्यों चले जाते हो! दलदल के समीप जाने से दूर से ही दलदल अपने तरफ खींच लेती है।

12) जो सदा सन्तुष्टमणियाँ हैं, स्वयं भी सन्तुष्ट रहती, सेवा से भी सन्तुष्ट, सम्पर्क में भी सन्तुष्ट हैं, ऐसी सन्तुष्टमणियाँ सदा दिलतख्तनशीन हैं। ऐसा जो तख्तनशीन होगा वह सदा खुशी

और नशे में रहेगा।

13) दिलतख्तनशीन बच्चों को कोई भी प्रकार की मेहनत नहीं हो सकती। संकल्प किया और सफलता मिली। विधि का स्विच ऑन किया और सिद्धि प्राप्त हुई। ऐसे सिद्धि स्वरूप हो या मेहनत करके थक जाते हो! मेहनत करने का कारण है अलबेलापन और आलस्य। स्मृति स्वरूप के किले के अन्दर नहीं रहते हो वा किले में रहते हुए कोई न कोई शक्ति की कमजोरी के दरवाजे वा खिड़की खोल देते हो इसलिए माया को चांस दे देते हो।

14) “दिल से मेरा बाबा कहो” और बाप के दिलतख्तनशीन बनो। बाप में ही संसार है, इस संसार में रहने वाले सदा ही प्राप्तियों के, खुशियों के अलौकिक झूलों में झूलते हैं। इस संसार में रहने वाले सदा इस देह की मिट्टी के मैले-पन के

ऊपर फरिश्ता बन उड़ती कला में उड़ते रहते हैं। सदा रत्नों से खेलते हैं।

15) निश्चित विजयी का नशा और निश्चिन्त स्थिति - यह है बाप के दिलतख्तनशीन आत्मा की निशानी। जो भी आये, वह यह तख्तनशीन और ताजधारी स्थिति का अनुभव करे - यह है फीचर्स द्वारा फ्यूचर को प्रत्यक्ष करना। तो अकाल तख्तनशीन आत्मा, बाप के दिलतख्तनशीन आत्मा हूँ—इसी शान में रहो।

16) जो सदा बाप के दिलतख्तनशीन रहते हैं वो सदा ही सेफ रहते हैं। सेफटी का स्थान “दिलतख्त” है। तो जो सदा दिलतख्तनशीन हैं वह निश्चित ही निश्चिन्त हैं। जैसे कहते हैं - भावी टाली नहीं जाती, अटल होती है। ऐसे दिलतख्तनशीन आत्मा निर्भय है, निश्चिन्त हैं - यह निश्चित है, अटल है।

शिवबाबा याद है ?

15-01-12

ओम् शान्ति

मधुबन

“जब अन्दर से रिंचक मात्र भी झूठ न हो तब बाबा कहेगा मेरा मीठा बच्चा”

(दादी जानकी)

बिन्दी लगाई जाती है, नेक्स्ट क्या करने का है। बिन्दी बात पूरी करने के लिए नहीं लगाते। बिन्दी निमित्त लगाते कि नया क्या करना है। तो 108 में आने वाले पहली बात को बिन्दी लगाकर आठ शक्तियों से काम लेते हैं। एक बाबा की याद है, फिर बीती को बिन्दी लगाई तो आठ शक्तियां आपेही काम करती हैं।

आठ शक्तियां नम्बरवार हैं। पहले है धीरज, पेशेन्स, फिर है सहनशक्ति फिर सन्तुष्ट रहने की शक्ति फिर है समाने वा समेटने की शक्ति, 5 शक्तियां हो गई तब सहयोग देने की शक्ति आई। उसके बाद परखने की शक्ति फिर है निर्णय करने की शक्ति। नम्बरवार हर शक्ति है। अगर सहनशक्ति नहीं है, धीरज नहीं है तो कोई शक्ति काम नहीं करेगी, तो परखने की शक्ति कहाँ से आयेगी। सहयोग दिया ही नहीं है तो मिलेगा कहाँ से। जब तक सच्चाई अन्दर आई नहीं है तब तक झूठ से छुटकारा कैसे हो! हमारे अन्दर झूठ की रिंचक मात्र भी न हो तब बाबा कहेगा यह मेरा मीठा बच्चा है। अच्छे बच्चों को बाबा याद करता है। जो सच्चे बच्चे हैं उनको याद करता है।

कर्मों की गुह्य गति गहन है। कोई भी किसने गलत काम किया है, रियलाइज नहीं किया तो न योग लगता, न कर्म अच्छे होते हैं। वह कोई न कोई प्रकार की भोगना में है। कर्म अच्छे नहीं किये हैं, भूल करके छिपाता है तो उसकी लाइफ क्या है। प्रेजन्ट समय कईयों के संकल्प अभिमान वश है या अपमान की फीलिंग में

हैं, उसकी भोगना बहुत है। स्थिति क्यों नहीं बनती? समझता है इन्हों का व्यवहार ऐसा है। इस सोच की भोगना ऐसी है जो योग लगाने का इन्ट्रेस्ट भी नहीं होगा। योग से कितना फायदा है, सम्बन्ध अच्छा रखना है, वह भी ख्याल में नहीं आयेगा।

हमारे संकल्पों की क्वालिटी हाई क्लास कैसी हो! किस प्रकार के संकल्प हो जिसमें बाबा की याद हो। यह बाबा ने सिखाया है। अन्दर से बाबा निकले। बाबा मुझे चला रहा है। अभी प्रैक्टिकल जो खेल देख रहे हैं, इतनी वृद्धि देख रहे हैं, इतना बड़ा यज्ञ देख रहे हैं, यह बाबा की कमाल है। अच्छे अच्छे बच्चे ऐसी सेवायें कर रहे हैं। मैं भी अच्छे बच्चों में आऊँ ना।

वृत्ति, दृष्टि, स्थिति, स्मृति.. जैसी मनोवृत्ति है वैसी दृष्टि है। उनसे स्थिति बनती है। वही हमारी स्मृति में रहता है। पुरुषार्थ में ऐसी अच्छी अच्छी श्रेष्ठ बातें बुद्धि में हो। दूसरा सबका भला हो, यह भावना हो तो पुरुषार्थ अच्छा चलेगा।

गुणवान होंगे तो गुणदान करेंगे। तो मेरे में सर्वगुण हों, यह अटेन्शन रखना है। फिर मेरे संग से औरों में भी गुण आ जायेंगे। मुझे किसका अवगुण नहीं देखना है। किसके अवगुण चित्त पर नहीं रखने हैं। अगर किसी के अवगुणों पर ध्यान जाता है तो बहुत घाटे में पड़ जाते हैं। यह बातें समझेंगे तो स्मृति ऐसी रहेगी जो उसको देखेगा वह भी स्मृति में आ जायेगा। स्मृति में रहना और जो मिले उसको बाबा की स्मृति आ जाए। स्मृति का कनेक्शन सिमरण

के साथ है। सिमर सिमर सुख पाओ। अन्दर जो क्लेष की, नाराज़गी की नेचर है वह क्यों है? क्योंकि ज्ञान का सिमरण नहीं है। सिमरण बड़ा सुखी बनाता है। सिमर सिमर.. धीरे धीरे माला सिमरते हैं तो सुख पाते हैं, वैजयन्ती माला में आ जाते हैं। वैजयन्ती माला में आने का विजयी बनने का पुरुषार्थ अलग है। अन्त मते विजय हुई पड़ी है।

अन्दर मदद बाबा की तभी होती है जब बाबा में विश्वास रखते हैं। दूसरा हमारा सब सफल हो। सफल कौन करेगा? जिनको पाता है बाबा ने यज्ञ रचा है। कोई अपना सब कुछ सफल करते हैं तो बाबा उनकी जिम्मेवारी ले लेता है। जिन्होंने यज्ञ में सफल किया है, उनकी अन्त मते तक बाबा ने जिम्मेवारी उठाई है। जो अपनी जिम्मेवारी उठाते हैं या कोई की जिम्मेवारी का ख्याल करते हैं

उसका पद कम हो जाता है। तन से जिन्होंने हड्डी सेवा की है तो परिवार भी उनकी सेवा के लिए बंधा हुआ है। जो अपने ही तन का ख्याल करेगा तो बाबा ख्याल नहीं रखेगा।

आयु भले बड़ी हो जाए काया निरोगी रहे। फिर कोई न कोई डॉक्टर भी निमित्त बन जाता है। धन सफल करने से दुआयें बहुत हैं क्योंकि सफल किया तो उसको दुआयें चलायेंगी, यह फीलिंग आयेगी। तन मन धन तीनों जितना सफल करे, मन बाबा की सेवा में है। बाबा में होगा तो सेवा में लगेगा। बाबा के त्याग को देखकर हमको कितना फायदा हुआ है। बाबा को देखकर त्याग वृत्ति हुई है। दूसरी तपस्या ऐसी, जो अव्यक्त होकर भी बाबा की तपस्या इतनी वृद्धि कर रही है। बाबा की तपस्वी मूर्त हमारे सामने है। सारे विश्व में बाबा ने हम बच्चों को आगे रखा है।

16-01-12

“बुद्धि की लाइन क्लीन और क्लीयर हो तो कोई भी डिस्ीजन लेना सहज है”

(दादी जानकी)

हर दिन होवत न एक समान, हर आत्मा न होवत एक समान... लेकिन संगमयुग का हर दिन कितना सुखमय रहने का है जिसकी प्लैटिनम जुबली मना रहे हैं। किसने यह सब खेल रचाया? भगवान ने। संगम पर साकार से लेकर अव्यक्त ने कितनी सुन्दर रचना पैदा की है! साकार ने डायरेक्ट सैकड़ों को पैदा किया फिर हज़ारों हुए, अभी लाखों पैदा हुए और अब सारी दुनिया को कहना है “मेरा बाबा”। अन्दर से “बाबा” आवाज़ निकलने से ही इस दुनिया से पार हो जाते हैं। परमधाम निवासी शिवबाबा, ब्रह्माबाबा को भी साथी बना करके अव्यक्त वतन में रहते हैं। तो हम भी कहाँ रंगेंगे? क्योंकि बाबा वतन में और हम यहाँ क्यों रहें?

मनोवृत्ति से ही स्थिति बनती है, हमारी स्थिति ऐसी अचल डोल हो। मनोवृत्ति अच्छी बनेगी मनमनाभव से। अगर स्थिति नानी है तो स्वदर्शन चक्रधारी बनो, मध्याजीभव। मुझे लक्ष्मी-नारायण जैसा बनना है, सूर्यवंशी में आना है। जैसे सूर्य 24 ही घण्टा सेवा करता है, यहाँ दिन है तो कहीं रात होगी, कहीं रात होगी तो यहाँ दिन होगा, तो हम ज्ञान सूर्य के बच्चे हैं, हमको भी नींद को जीतने वाले बन 24 ही घण्टा दिन और रात ज्ञान सूर्य के समान सेवा करनी है। सेवा तभी होगी जब बैलेंस होगा। बैलेंस वालों को ब्लैसिंग अच्छी मिलती है, ब्लिसफुल रहते हैं। तो इतना अटेंशन रखना होगा क्योंकि स्थिति ही बताती है मुझे बाप समान बनना है। बाप समान बनने वाले अनेकों को आप समान बनायेंगे। तो स्थिति पर ध्यान रखना माना मन वाणी कर्म श्रेष्ठ हो, साधारण न हो। तो सूक्ष्म है मनोवृत्ति से वायब्रेशन आते हैं, वृत्ति से वायुमण्डल

बनता है। अगर मेरी मनोवृत्ति शुद्ध शान्त है, सच्चाई और प्रेम है तो स्थिति लाइट रहके माइट खींच रही है। देह से न्यारे हो करके बाबा के प्यारे बन रहे हैं।

कईयों का सूक्ष्म मोह है, जो बाबा के प्यार की शक्ति को खींचने नहीं देता है। तो देह और देह के सम्बन्ध से न्यारा बनना माना प्रभु का प्यारा बनना। तो अपने आइने में देखो कि मेरे में क्या कमी है? कमी देख फिर निराश भी न हो जाओ, मेरे में बहुत कमी है, मैं पुरुषार्थ नहीं कर सकती हूँ... अच्छा पुरुषार्थ नहीं करते हैं तो पुरुषार्थ मुश्किल लगता है। पुरुषार्थ क्या है? संगमयुग है... बाबा बैठा है... हम बाबा के समर्पण बच्चे हैं, जीवन सफल कर रहे हैं तो क्या पुरुषार्थ है! एन्जाए करने का पुरुषार्थ करो तो खुश रहेंगे। कुछ भी हो जाये, खुशी नहीं जा सकती है क्योंकि खुशी खुराक भी है, खजाना भी है। तो मजबूत भी रहना है, बुजुर्ग भी रहना है, बुजुर्ग माना अनुभवी, उसमें निर्णयशक्ति अच्छी होती है। जब सर्वशक्तित्वान बाबा के बच्चे हैं तो आठों शक्तियाँ चारों तरफ सामने घूमती रहती हैं। बुद्धि की लाइन क्लीन और क्लीयर है तो कोई भी डिस्ीजन लेना सहज हो जाता है। ऐसा पुरुषार्थ संगमयुग पर करना है।

मेरे को किसी ने पूछा कभी आपको दुःख हुआ है? तो मैंने कहा कभी दुःख होता तो प्लैटिनम जुबली कैसे मनाती! जो न दुःख देते, न लेते उनकी जुबली मना रहे हैं। जो लाइट माइट है वो एवरीथिंग राइट है। जो राइट है वो भले होता रहे, जो राइट नहीं है वो नहीं करना, किसी के प्रभाव या दबाव में नहीं आना। ऐसी

स्थिति बनाने वाले की अन्त मते सो गति अच्छी होगी क्योंकि जो बहुतकाल से पुरुषार्थ करते, अपनी स्थिति पर ध्यान रखते, स्मृति से समर्थी आती है। तो एक तरफ सफल करना है, विजयी बनना है। कभी कोई माया के तूफानों से हार नहीं खाना है, कैसे भी तूफान आये, यह लड़ाई है दीवे और तूफान की। भले दीवा छोटा-सा है, परन्तु आत्मा चमकता हुआ स्टार है। ज्ञान सूर्य का बच्चा है, सम्पूर्ण बनना ही है तो उसको तूफान क्या करेगा! डरना, घबराना नहीं है पर सच्चा बनना है। थोड़ी भी भूल हो बाबा को बता

दो क्योंकि सच्चा बनने से ही स्थिति अच्छी बनती है। ऐसी स्थिति बनाओ जिसे देख औरों को भी स्मृति आये कि मुझे भी ऐसा बाबा समान बनने की बाबा की बात याद आ जाये। चलाने वाला चला रहा है, देह-अभिमान से परे हैं और कर्म करते न्यारे हैं। बाबा का प्यार खींच रहे हैं और उपराम होकर चल रहे हैं। त्याग वृत्ति से तपस्वी मूर्त बन सेवा कर रहे हैं। ऐसे चलता हुआ देख और भी चलने लग पड़ें। तो बाबा कहता है अभी उड़ते रहो, उड़ाते रहो। अच्छा।

09-07-12

“अपने आपको वा दूसरों को बदलने का इन्जेक्शन शुभ भावना-शुभकामना” (गुल्जार दादी)

(टीचर्स बहिनों के साथ दादी गुल्जार जी का क्लास)

हम सभी को पहले तो यह खुशी और अपने ऊपर नाज़ होना चाहिए, दिल से बार-बार वाह बाबा, वाह बाबा, वाह बाबा वाह! निकलना चाहिए, जो हमें बाबा ने अपनी सेवा में सहयोगी साथी बनाया है। उसमें भी पहले स्व की सेवा फिर दूसरों की जिम्मेवारी। तो सुबह उठते ही पहले बाबा से मिलते हैं तो बाबा जो कहते हैं वो सुनते हैं, बाबा जो देता है वो लेते हैं यानि शक्ति अपने में भरते हैं। उसके बाद 10-15 मिनट निकालके जो बाबा से शक्ति मिली, उसको आज दिन में कैसे यूज़ करेंगे, अपनी दिनचर्या प्रमाण आज के दिन अपनी स्थिति कैसी रहेगी, उसके ऊपर सोचना चाहिए। अपने मन को चेक करो क्योंकि मन में ही यहाँ वहाँ के व्यर्थ संकल्प चलते हैं या कोई के भी संस्कार का टक्कर भी मन में ही होता है इसलिए बाबा ने खास कहा तो अपने मन की सारे दिन की दिनचर्या सेट करो।

जैसे चंचल बच्चे को जान-बूझ के खिलौना देके बिजी रखते हैं क्योंकि समझाने से हाँ हाँ करके थोड़ा टाइम शान्त रहेगा लेकिन शान्ति से बैठ नहीं सकता है वो चंचल बच्चा। तो मन भी आजकल सबका चंचल तो हो ही गया है। द्वापर से कलियुग तक मन की हालत क्या हो गई है और बाबा ने इशारा भी दिया है कि मन का टाइमटेबल बनाओ। बाबा ने बहुत युक्तियाँ, तरीके बताये हुए हैं, उसमें मन को बिजी रखो। जैसे 3 स्वरूपों की ड्रिल, 5 स्वरूपों की ड्रिल.. बाबा ने कई बारी सुनाई और प्रैक्टिकल सभा में कराई भी है, इन ड्रिल के द्वारा भी मन को अपने कन्ट्रोल में रखो। मन यहाँ वहाँ न जाये क्योंकि मन ठीक तो सब ठीक। दूसरा बाबा ने मन्सा सेवा की युक्ति बताई है तो जिन्हें मन्सा सेवा करना आता है और जो ऐसी सेवा करते हैं वो हाथ उठाओ। तो मन्सा सेवा यानि अपनी पाँवरफुल किरणें, याद से शक्तियों की जो किरणें मिलती हैं वो आत्माओं को देना। तो मन को मन्सा सेवा में बिजी रखो, ड्रिल

करो।

दूसरा बाबा ने कहा बार-बार चेक करो मेरा मन जो है सेवा के सिवाए और कहाँ चक्कर लगाने तो नहीं गया? क्योंकि मन तो सेकेण्ड में कहाँ से कहाँ चला जाता है। तो मन की कन्ट्रोलिंग पाँवर और रूलिंग पाँवर को बढ़ाना है। बाबा ने जो हमें योग सिखाया है वो इसीलिए है कि मैं कौन हूँ? और मन क्या है? अपने पोजीशन में खड़े रहें तो मन कभी भी चंचल नहीं होगा। नहीं तो आदत होती है तो मन फालतू संकल्पों में चल जायेगा। अगर मन को बिजी नहीं रखेंगे तो व्यर्थ संकल्पों में चला जाता है। पिछले बारी इसी बात के लिये बाबा ने सभी को होमवर्क दिया था कि मन को अपने वश में रखने की कला आयी? जब मन व्यर्थ चलता है तो उस समय रूलिंग पाँवर काम नहीं करती है।

संगमयुग की विशेषताओं की स्मृतियों में भी मन को बिजी रखने से बेस्ट से बेस्ट बन जायेंगे। किसी भी वेस्टेज़ को एक सेकेण्ड में फुलस्टॉप लगा सकते हैं कि टाइम लगता है? क्योंकि बाबा अचानक का पाठ भी बहुत समय से पढ़ा रहे हैं, जो भी होना है अचानक होना है। तब बाबा ने कहा संगमयुग का एक एक सेकेण्ड एक एक संकल्प बहुत ही महत्वपूर्ण है, इसका 21 जन्मों के साथ कनेक्शन है। इतना मन के ऊपर अटेन्शन है? समय और संकल्प पर ध्यान है? अगर संगम पर आप मन पर कन्ट्रोल करके अच्छे कार्य में लगाते रहेंगे, मन को कन्ट्रोलिंग पाँवर में रखेंगे तो आपके 21 जन्म श्रेष्ठ बन जायेंगे। अभी संगम के समय में ही अपने भाग्य को ऐसा उंच श्रेष्ठ बना सकते हैं फिर तो बना हुआ भोगना है यानि कार्य में लगाना है इसलिए इतना अण्डरलाइन और अटेन्शन हरेक का है? संगम है बनाने का और फिर है 21 जन्म भोगने का, इसीलिए बाबा बार-बार कहते हैं मन को कन्ट्रोल करने की पाँवर रखो। तो इतना अटेन्शन मन को कन्ट्रोल करने पर है?

हम सब बाबा के निमित्त बच्चे हैं। अगर हमारा अटेन्शन ही कम होगा तो दूसरों का हाल क्या होगा! वो तो बिचारे डबल काम करते हैं, कैसे-कैसे वायुमण्डल में रहते हैं? हमारे लिये तो सब कुछ अच्छा, अटेन्शन भी अच्छा, टाइम भी निकल सकता है। फिर भी हम अगर अलबेले होंगे, तो जिनके निमित्त हैं उन बिचारों की क्या अवस्था होगी? तो हमें अटेन्शन में रहना है, अटेन्शन दिलाना है। मानो हम अलबेले हैं कन्ट्रोलिंग पॉवर नहीं है, रूलिंग पॉवर नहीं है जो आया वो किया, जो आया वो बोला तो फिर वायुमण्डल क्या बनेगा? और उसकी जिम्मेवारी हमारे को कितना कुछ अनुभव करायेगी, अच्छा तो नहीं बुरा ही अनुभव करायेगी। सेन्टर का वायुमण्डल पॉवरफुल नहीं बनेगा। सेन्टर परमात्मा का घर है। बाबा के घर में बाबा का वायब्रेशन है, बाबा की पॉवर है। अगर मानो हम इतना अटेन्शन नहीं रखते हैं तो बाबा की पॉवर सेन्टर में होगी नहीं। सेन्टर पर आते ही इसलिये हैं कि दुनियावी खिटखिट से दूर हो थोड़ा शान्ति से बैठ जायें। लेकिन निमित्त आत्माओं की अगर वो शान्ति की स्थिति नहीं है तो सेन्टर पर आके भी उनको शान्ति का वायब्रेशन नहीं मिलेगा। तो सेन्टर माना जिम्मेवार।

तो निमित्त टीचर माना जिम्मेवार। मानो कोई बात हो गई, सारा दिन वही व्यर्थ चिंतन चलता है, क्यों कहा, क्या कहा, कैसे कहा, कब तक कहेंगे? यह ऐसे कैसे चलेगा, यह तो ऐसा होना चाहिए...। कोई एक में कोई 108 में क्यों आये? कोई तो कारण होगा ना, कोई धारणा में फर्क होगा ना, कोई तो कमी होगी ना जो 108 वां माला का मणका बनें और कोई 16 हजार में बनें। तो हमारा ऐसा कोई वायब्रेशन होगा। तो जिज्ञासुओं में ताकत कैसे आयेगी? उन्हों के भी पॉवरफुल नहीं बनने की जिम्मेवारी टीचर्स की है। टीचर तो बन गये यह तो समझो हमारा लक है। जो बाबा ने कहाँ कहाँ से चुन करके हमको टीचर बनाया। सर्टिफिकेट दिया है, हाँ यह टीचर है।

एक तो बाबा ने हम पर विशेष कृपा दृष्टि रखी कि टीचर के लिए हमें चुना, यह कम लक है क्या? कितना भाग्य है आपका, टीचर बाबा ने बनाया माना हमको योग्य समझा। भगवान ने हमको योग्य समझके टीचर बनाया। तो भगवान ने हमारे में योग्यता देखी तो हमको करना पड़ेगा ना।

तो अमृतवेले उठके पहले बाबा से मिलके, 5-10 मिनट बैठके सारे दिन में मन के दिनचर्या का प्रोग्राम सेट करो। डिल करेंगे, सेवा करेंगे, अपने ऊपर अटेन्शन रखेंगे। योग में भी क्या कहते हैं, मनमनाभव। योग माना हमारा मन बाबा में लग जाये। ऐसे नहीं जिज्ञासु याद आया, सर्विस याद आयी... जिस समय हम योग में बैठते हैं उस समय मैं और मेरे बाबा के सिवाए और कुछ याद नहीं आये। बाबा से शक्ति मिली है, बाबा से गुण मिले हैं, उन स्वरूपों में स्थित हो जायें। बाबा ने जो मन्सा सेवा बताई है, सारा

दिन उस सेवा में अपने को चेक करें, हमारी मन्सा सेवा कर रही है या कहाँ व्यर्थ में चली जा रही है? चेकिंग बहुत चाहिए, पूरा दिन बीता, रात में चेक किया, ऐसे भी नहीं चलेगा। हर घण्टे मन के गति को चेक करना चाहिए। अपनी अवस्था की रिजल्ट में कोई गलती हो गयी हो, कोई संकल्प में वाणी में या कर्म में जिसको बाबा कहते हैं कर्म माना स्वभाव-संस्कार में कोई भूल हो गयी हो... पूरे दिन में तो उसी रात में बाबा को अपनी गलती वा भूल सुनाओ और माफ कराओ क्योंकि बाबा अभी बाप के रूप में है, धर्मराज कुछ नहीं सुनेगा वो तो आँख दिखायेगा। तो रात को ऐसे नहीं सोना, सारे दिन की दिनचर्या बाप को सुनाके सोना नहीं तो धर्मराजपुरी की बहुत कड़ी सजायें खायेंगे। बहुत ही दर्दनाक तकलीफ देने वाली सजायें होंगी इसीलिए यहाँ ही बाबा से चुक्त्तू करा दो, और प्रॉमिस करो कल से मैं यह गलती या भूल फिर नहीं करूँगी क्योंकि बाबा को सुनाके शिक्षा ली तो उसकी रिजल्ट क्या? बार-बार वही गलती होती रहे और हम माफी लेते रहें, ऐसे नहीं। एक बार बाबा से माफी ले ली, रोज थोड़ेही माफ करेगा। तब कहा टीचर बनना माना इतना अपने ऊपर अटेन्शन देना। टीचर तो हो गये वो तो टाइल मिला लेकिन पोजीशन अनुसार अपनी स्टेज अवस्था अटेन्शन में रहे।

कोई अपने साथी बहुत कड़े होते हैं, वो अपने को बदलते ही नहीं है लेकिन हम तो अपने आपको बदल सकते हैं ना क्योंकि हम टीचर हैं। आप ऐसे के ऊपर भी शुभ भावना शुभ कामना रख सकते हैं। हमारी शुभ भावना शुभ कामना का इंजेक्शन कैसे को भी शान्त कर सकता है, अगर पुरुषार्थ सही दिशा में है तो। सच्चे दिल का संकल्प पहुँचता है, तो वो शुद्ध संकल्प काम जरूर करेगा यानि वो बदले न बदले पर स्वयं तो बदल ही जाते हैं। तो सेन्टर का वायुमण्डल ही ऐसा बनायें जो उसका कुछ चल नहीं सके माना दूसरे का असर हमारे ऊपर न आये। इसके लिये सदा बाबा को दिल में रखो, बाबा साथ है, हर बात में साथी है, तो उसका साथ भी लो। हम अकेले हैं तो माया आयेगी, और अगर मेरे साथ बाबा है, तो माया की ताकत नहीं है आने की। वो तो दूर से प्रणाम करेगी, अगर आ जाती है माना बाबा साथी नहीं है, अकेले हैं, कम्बाइंड नहीं हैं।

बाबा ने तो कहा है कि ज़ोन, सबजोन, सेन्टर, सब-सेन्टर सब निर्विघ्न बनके दिखायें तो मैं इनाम दूँगा। इसमें सिर्फ बड़ों की जिम्मेवारी नहीं है, हरेक छोटे-बड़े की जिम्मेवारी है। तो बहुत बहुत बहुत अटेन्शन प्लीज़। कुछ भी करो, पहले चेक करो ठीक किया? अगर हमारे मन की गति ठीक नहीं है फिर कितना भी कुछ करो, कुछ न कुछ मिक्स हो ही जायेगा इसलिए मन को ठीक रखो।

सेन्टरों पर संस्कारों का टक्कर क्यों होता है? बाप समान रहमदिल नहीं हैं और संस्कार टक्कर वाला सेन्टर कभी आगे नहीं

बढ़ सकता है। बाबा के दिल पर भी नहीं चढ़ सकते हैं। व्यर्थ संकल्पों पर भी जीत नहीं हो सकती है। और सबके संस्कार तो एक होंगे नहीं इसलिए क्यों क्या में गये, तो आप भी माला से बाहर हो गये। तब बाबा कहते कोई क्या करता, क्यों करता... इसमें विचलित न हो जायें। हमारी सूरत में ऐसी विशेषता, ऐसे पाँवरफुल वायब्रेशन्स होने चाहिए जो विचलित वाला भी अगर हमारे सामने आ जाये तो वो भी शान्त अचल होके जाये। जो भी बन्धन हैं अपने अपने, वो तो सब अच्छी तरह से जानते ही हैं, उन बन्धनों से मुक्त होके जाना ही है, बन्धनों से मुक्त होके जाने का काम करके ही जाना है। बन्धनमुक्त की निशानी है वो निर्विकल्प होंगे। निर्विकल्प की निशानी है उनका मन मनमनाभव हो जायेगा।

कई समझते हैं जोर से कहने वा जोश से बोलने से वो समझ जाती है, नहीं, वह उस समय पर दब जाती है लेकिन बदलती नहीं है और उसके आगे प्यार से समझाओ तो वो कभी फिर ऐसी

समझानी भूल ही नहीं सकती है। दूसरा बाबा ने कहा कभी कभी खुश रहते तो बाकी क्या रहते? तो सदा खुश रहो। तो ऐसे टीचर्स का भाग्य मिलना भी कम नहीं समझो। दुनिया की कितनी बातों से बचे हुए हैं। आजकल दुनिया में कितनी महंगाई है! एक एक चीज़ के लिये सोचते हैं और हमको बना बनाया सब प्राप्त होता रहता है। खाओ पिओ मौज करो, कौनसी कमी है? तो अब सब निर्विघ्न रहेंगे ना! मन से अर्थ सहित अगर कोई ओम् शान्ति कहा तो सचमुच मन शान्त हो जाता है। और जब मन शान्त हो गया माना सब शान्त हो गया। अर्थ से ओम् शान्ति कहना अर्थात् निर्विघ्न रहना। और एक ही अक्षर में सब कुछ आ जाता है। व्यर्थ यहीं छोड़के जाने का पुरुषार्थ करके खुश होके जाओ। उसी को सदा के लिए बनाये रखना माना खुश रहना और बाबा को खुश करना। अभी बाबा को भट्टी का प्रैक्टिकल रूप दिखाना तो बाबा के पास पहुँच जायेगा। अच्छा, ओम शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

“स्वयं को निमित्त समझकर सदा बेफिक्र बादशाह चिन्ता मुक्त बनो”

हम सब हैं बेफिक्र बादशाह बाबा के बच्चे—सदा बेगमपुर के बादशाह। कई लोग मेरे से यह सवाल पूछते हैं कि दादी आपको कोई फिक्र होता है? क्योंकि जानते तो हैं कि आखिर इतने बड़े कार्य-व्यवहार की कई बातें होती हैं। रोज़ की अनेक बातें हर मिनट में आती जाती हैं। कई बार तो एक में दूसरी, दूसरी में तीसरी बात आती तो फिक्र तो रहना चाहिए ना! परन्तु बाबा का मुझे यह सचमुच पर्सनल वरदान है कि हमें न कोई भी फिक्र होता, न कोई चिन्ता होती, न कोई चिन्तन चलता – इसका कारण है कि हम निमित्त हैं। फिक्र करके करने वाला करे, मैं क्यों करूँ? मेरी कोई रचना है क्या जो मैं फिक्र करूँ! तेरी रचना है तू उनका फिक्र करो, मुझे आप कहते हो कि यह कार्य करो तो मैं करती हूँ। तू कराने वाला है, हम निमित्त हैं। अच्छा है तो भी आप बैठे हो, रांग हुआ तो भी आप जवाबदार हो, तो फिक्र करके किसकी? कोई बात है प्लान करो, राय करो – कैसे करें, क्या करें लेकिन चिन्ता किस चीज़ की! चिन्ता चिन्ता के बराबर है। हम कभी चिन्ता करते नहीं। आप लोगों ने कभी देखा है? फिक्र से फारिग कींदा स्वामी सदगुरु। तो फिक्र वह करे हम क्यों करें। तो संगमयुग की विशेषता है - बेफिक्र बादशाह बनो।

आप सभी बापदादा के दिलतख्त पर बैठ जाओ तो किसी चीज़ का फिक्र नहीं होगा। जो खिलावे, सो खाना है, जो पहनावे सो पहनना है, अगर उसे हमें बेगरी पार्ट में रखना होगा तो भी हम उसमें राज़ी,

अगर हमें राजकुमारों की तरह पालेंगे तो भी राज़ी हैं। बाकी किस चीज़ की चिन्ता! बाबा कहता है सर्विस करो, हम कहते हैं करो। बाबा ने इशारा किया, ज्ञान सरोवर के लिए जमीन लो, एकडमी बनाओ, जो आज्ञा... बस, इसके आगे कुछ नहीं। मैंने कहा - बाबा भोलानाथ आप हो, भण्डारी आपकी है, भण्डारी में क्या है, वह आप जानते हैं, आप खिलाले हैं, हम खाते हैं। तो बाबा क्या कहता - हाँ बच्ची, बाबा बैठा है आप बनाओ। तो कोई ने पाँच रुपया भी भेजा, कोई ने पाँच हजार भी भेजा तो कोई ने कुछ भी भेजा। बाबा के लाख बच्चे हैं। कैसे-कैसे गरीब निवाज़ बाबा ने अनेक गरीब बच्चों की पाई-पाई सफल की। फिर ऐसे ही ज्ञान सरोवर के बाद शान्तिवन बनवाया। यह प्रैक्टिकल उदाहरण है, हमें बाबा ने बेफिक्र बादशाह बनाया है। जितना देगा उतना बनायेंगे, जितना आज्ञा करेगा, उतना करेंगे। हमारा एक ही मन्त्र है – जी हज़ूर हम हाज़िर हैं। वह हज़ूर है, जो हुक्म करे। बाकी चिन्ता क्या करूँ! तो फिर आप लोग क्यों चिन्ता करते? किस बात की फिक्र करके? बस यही कहेगा ना सूखा रोटला खाओ तो भी खायेंगे, कहेगा 36 प्रकार का खाना खाओ तो भी खायेंगे। हमारे लिये दोनों बराबर हैं। ऐसे भी कई योगी होते हैं, गुफा में रहते हैं, एक-एक मास पानी पर रहते हैं, कोई टाइम आयेगा तो हम भी पानी पर रह लेंगे। अभी तक तो नहीं आया है। तो कहने का भाव है फिक्र से फारिग रहो। एकदम सब फिक्र करके त्याग करके जाओ। जो आवे

जैसा आवे, जो खिलावे जहाँ जैसे सुलावे, सबमें सन्तुष्टमणी बनो। सन्तुष्टमणी रहो। खुश रहो, खुशी की खुराक खाओ। दिलखुश मिठाई खाओ, बस।

दूसरी फिकरात किस चीज़ की आती? कभी-कभी आपस में संगठन में रहते, थोड़ा बहुत भाव-स्वभाव आता, थोड़ा चिन्तन चलता – इसकी भी विधि सीखो। आप आपस में दो लोग रहते आपकी आपस में नहीं बनती, आप कहते हैं यह बुरा, वह कहता यह बुरा, अच्छा यह भी बुरा, वह भी बुरा। लेकिन कोई तो अच्छाई होगी या नहीं होगी? तो अच्छाई से बात करो ना। तो जब तुम अच्छाई वाले से बात कर लेगे तो बुराई आपेही खत्म हो जायेगी। बुराई को देखकर बात नहीं करो, उसके बदले अच्छाई देखकर बात करो तो बुराई आपेही खत्म हो जायेगी, जिसको बाबा कहते तुम शुभ-भावना रखो तो शुभ भावना से कामना पूरी होती है। फिर हम किसके लिए लड़ें। मान लो संगठन है, संगठन में आपने कोई बात कही, मैंने नहीं मानी तो आपको बुरा लगा कि यह मेरी बात नहीं मानता, जिसको जिद्द कहते हैं। अच्छा कोई बात नहीं मानता, जिद्द करता आप वह बात छोड़ दो। आपेही ठण्डा हो जायेगा। आपकी भावना है उसको अच्छा बनाने की तो आप दूसरी युक्ति से मनाओ। जो राइट बात है, उसको बताना हमारा कर्तव्य है। आगे वाले का काम है मानना, फिर भी कोई जिद्द करता है तो वह उसका विकर्म बनता, हम उसके विकर्म के साथी नहीं बने। एक विकर्म करे तो मैं दूसरा विकर्म नहीं करूँ। कोई बात भले रांग दूसरे की है मेरी नहीं है, लेकिन मैंने कह दिया अच्छा भैया ओम् शान्ति, सॉरी... तो वह बात खत्म हो गई। जो टेम्परेचर चढ़ा था वह स्वतः ही डाउन हो जायेगा। मैंने सॉरी किया तो इसमें मेरी साड़ी तो मैली नहीं हो गई ना! सॉरी करने से कम से कम दूसरे का दिमाग तो ठण्डा हो गया, ओ. के. जो तुम्हारी इच्छा। जैसे तुम चाहो, बस, खत्म।

श्रीमत के फरमान पर चलना - यह हमारा धर्म है। धर्म कहो,

आज्ञा कहो, मर्यादा कहो। तो श्रीमत क्या कहती है—वह सोचो बस। क्या श्रीमत कहती है कि आपस में लड़ो, मूड ऑफ़ करो, मनमत पर चलो? श्रीमत ने कहा है क्या कि किसी से लगाव रखो, ऐसा वैसा व्यवहार करो, इस-इस तरह का धन्धा करो? तो बाबा की आज्ञा में सदैव चलो। मैं कदम-कदम श्रीमत पर चल रहा हूँ - इसका चार्ट नोट करो। श्रीमत पर न चलना माना विकर्म करना। श्रीमत के अन्दर सब धारणाएँ आती हैं। श्रीमत कहती रोज़ मुरली सुनो, सवेरे उठो, ज्ञान-स्नान करो, मर्यादाओं में चलो, पवित्र रहो, ब्राह्मण कुल की लाज रखो। यह सब श्रीमत है ना। दूसरों की सर्विस करो, सभी को बाबा का परिचय दो, सेवा करो यह सब श्रीमत है। तो बाबा और श्रीमत। अब श्रीमत कहती है कि आप योग की यात्रा का अभ्यास ज्यादा करो। यह है अन्तिम श्रीमत की आज्ञा, इसीलिए अब यह सब जो पुराने संस्कार हैं, उन्हें खत्म करने के लिए बाबा ने श्रीमत दी है एकाग्रता का अभ्यास करो, अशरीरी बनो। यह अभ्यास कमी-कमजोरियों को खत्म करेगा। जो भी कोई संस्कारों की कमी है, उसे आज ही स्वाहा करो। दिल से रियलाइज़ करके अपनी कमजोरी को कम से कम 100 बार लिखो और बाबा से माफी लो। सभा में सुनाओ तो देह-अभिमान का संस्कार खत्म हो जायेगा। जो भी ईश्वरीय मर्यादा के विपरीत बातें होती, आपस में हंसना, बहलना, टी.वी. देखना... इन सब बातों को अब समाप्त करो। योग की कमाई करो।

हम ब्राह्मण कुल भूषण हैं हमारे मुख से सदैव रत्न निकलने चाहिए। कभी कुवचन नहीं निकले। कईयों के मुख पर गाली झट आ जाती, जो बहुत-बहुत खराब लगता है। दो-चार गालियाँ सेकण्ड में किसको दे देंगे, एक दूसरे का गला पकडकर किसी को चाटा मार देंगे, यह हम ब्राह्मण कर नहीं सकते। क्या जिस टाइम तुमने किसी को चाटा मारा, तुम्हें दर्द नहीं हुआ? क्रोधमुक्त होने का तो सभी पक्का वायदा करो। दृष्टि-वृत्ति भी सदा पावन रहे—ऐसी सच्ची प्रतिज्ञा करो। अच्छा - ओम् शान्ति।

मेडिकल विंग की मीटिंग

बी.के.भाई-बहनों के लिए विशेष खुशखबरी एवं हार्दिक निमन्त्रण

दिसम्बर 2012 मेडिकल विंग की वार्षिक मीटिंग में भाग लेने वाले सभी भाई-बहनों का उमंग-उत्साह देख करके **मार्च 18 से 20, 2013 तक ट्रेनिंग का कार्यक्रम रखा गया है।**

हमारे अतिप्रिय, बापदादा के नयनों के नूर मेडिकल विंग के सभी सदस्य मेडिकल विंग की सेवाओं को देखते हुए, मेडिकल विंग की सर्विस मीटिंग मार्च 21 से 24, 2013 तक रखी गई है। इस मीटिंग में अपनी लौकिक-अलौकिक सेवाओं को समेटकर आप सभी पधारने का कष्ट करना जी। अनुरोध के साथ-साथ दिल से हार्दिक निमन्त्रण है।

मार्च 21, 2013 को उद्घाटन
मार्च 23 - 24, 2013 मीटिंग

मार्च 22, 2013 को बापदादा से मधुर मिलन
मार्च 24, 2013 की सायं वापस जा सकते हैं